Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 4, March-2019, ISSN 2230-7540

एक कंठ विषपायी: नवीन एवं प्राचीन परम्पराओं का संघर्ष

Sweety Dhull*

Gurugram, Haryana

***सार** – पौराणिक गाथा जाति विशेष की संस्कृति के सौन्दर्यात्मक मूल्य तरीकों के कोष के रूप में मानी जा सकती है। यांत्रिक सभ्यता की पीड़ा और यंत्रणा से त्रस्त होकर अनेक कवियों ने पुरावृत्त खोजने और गढ़ने का प्रयत्न किया है। यांत्रिक सभ्यता की असंगतियों से त्रस्त परिवेश में पुरातत्व के माध्यम से पीड़ा और यंत्रणा की अभिव्यक्ति की गयी है।*

----------------------------------X--------------------------------

दुष्यन्त कुमार की रचनाएँ आधुनिक समय की धड़कनों की जीवन्त दस्तावेज है। अपने बहुस्तरीय व्यक्तित्व के कारण दुष्यन्त कुमार ने विश्व और भारतीय समाज को सम्पूर्णता में देखा है। उन्होंने आम आदमी की पीड़ा उत्तेजना, दबाव, अभाव और उनके सम्बन्धों की उलझन को अपने काव्य में व्यक्त किया है। मिथकीय चेतना से भरपूर ‘एक कंठ विषपायी’ खण्ड काव्य में प्रतीकात्मकता के माध्यम से आधुनिक पृष्ठभूमि और नये मूल्यों को संकेतित किया गया है। परम्परा को आधुनिकता का बाना पहनाकर ही मनुष्य सत्य से अपना नाता जोड़ सकता है। युगानुरूप नये मूल्यों को स्वीकार करने से ही समस्त मानव जाति का कल्याण होता है। ‘एक कंठ विषपायी’ की कथा परम्परा से मुक्ति की कहानी है।

मिथक आदिम मस्तिष्क से उत्पन्न एक क्रमवार चर्चा की पुरातन कथा है जो प्राचीन से चलकर अपने को नित्य नवीन बनाए रखता है। “नयी कविता युगीन संदर्भो में आधुनिक भाव-बोध और सौन्दर्य-बोध के स्तर पर खड़े मानवीय परिवेश को पूर्ण वैविध्य के साथ नये शिल्प में प्रस्तुत करने वाली काव्यधारा है। वह प्रत्येक क्षण लघु मानव और समकालीन जीवन से अनुप्रेरित अनुभूतियों को मुक्त पद की पीठ पर नये तकनीक में पाठकों तक संप्रेषित करके आस्वाद्य बना रही है।1

नयी कविता में सृजनात्मक परिप्रेक्ष्य, परम्परा बोध और आधुनिकता बोध के समन्वित वैचारिक आधार अवलम्बित है। इसमें मिथक काव्य की सर्जनात्मक प्रेरणा बहुत गहरे तक है। दुष्यन्त कुमार ने युगीन सरोकार और परिवेशगत स्थितियों से प्रेरणात्मक पृष्ठभूमि तैयार की है। ‘एक कंठ विषपायी’ जिस युग की रचना है वह युग वास्तव में विघटन का युग है। और यह विघटन किसी एक संदर्भ में नहीं अपितु अनेक संदर्भों में है। आज हमारे सामने अनेक समस्याएं है जिनका समाधान हमें ही ढूंढना है। आस्था, अनास्था, व्यक्तित्व, खण्डित व्यक्तित्व, युद्ध और शांति, आदि कई समस्याएं है जो हमारे विकल्प बनकर आने लगी है।

‘एक कंठ विषपायी’ रचना में आधुनिक जीवन की यथार्थ स्थिति का निरूपण हुआ है। प्रजा-पालक में संवेदना, सम्भाव का अभाव रहा है। जिससे साधारण जनता की जरूरतों की पूर्ति नहीं होती है। रोटी, कपड़ा और मकान आदि जनता को नसीब नहीं होता और शासक युद्ध के आयोजन में रहते हैं। आम जनता अन्न के दाने-दाने को मोहताज है। सर्वहत कहता है कि -

> तुम मुझको चुल्लू भर रक्त
>
> पिता सकते हो
>
> आह! आज मैं प्यासा हूँ।
>
> देखो ना! ये सूखे पड़े हैं मेरे होंठ
>
> जिन पर पपड़ियाँ उभर आई हैं।

डॉ. हरिचरण शर्मा के विचार से - “एक कंठ विषपायी’ पौराणिक प्राचीर पर आधुनिक भाव-बोध की एक तस्वीर है, जो युद्धाक्रान्त क्षुद्र जीवन के अंगों में डूबी हुई किन्तु नवीनता की डोर से बंधी हुई लगती है।”

www.ignited.in

स्वातंत्र्योत्तर समाज में सामाजिक षिमता का रूप और अधिक भयावह हुआ है। सरकारी दावों और वादों के बावजूद साधारण मनुष्य और पूंजीपति अथवा सत्ताधारी की सामाजिक सुविधाओं में गहरा अन्तर है। यहाँ तक कि न्यायतंत्र भी ऊँची पहुँच और आर्थिक सम्पन्नता के बल पर प्रभावित किया जा सकता है। सर्वहत इस स्थिति का प्रतीकार करता है -

बतलाओं/मुझमें या शिव में क्या अन्तर है?

यहीं ना कि मैं तो सर्वहत हूँ

साधारण हूँ

और वो विशिष्ट देवता है, शिव शंकर है

किन्तु प्यास दोनों की एक सी है।2

प्रेम विवाह आधुनिक युग की ज्वलंत समस्या है। नई कविता के सशक्त हस्ताक्षर होने के नाते दुष्यन्त कुमार जी मानव जीवन में नवीनता एवं परिवर्तन के पक्षधर रहे है। उन्होंने 'एक कंठ विषपायी' में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक रूढ़ियों एवं परम्पराओं पर अनेक घातक प्रहार किये है।

विवाह वर वधू का होता है पर उसका निश्चय दोनों के माता-पिता एवं अन्य परिवारजन करते हैं। कन्या मूक पशु के समान उसको सौंप दी जाती है, जिसे उसका पिता पसन्द करता है। अभिभावक यह समझने का प्रयत्न नहीं करते कि जीवन साथी चुनने का अधिकार एवं योग्यता नई पीढ़ी से सम्बन्धित है। लड़के-लडकी द्वारा अपनी पसन्द से किए गए प्रेम-विवाह को वे बहकाने की संज्ञा देते हैं और अपना अपमान समझते है।

कवि ने प्रेम-विवाह के प्रश्न को आधुनिक धरातल पर तीक्ष्णता से उठाया है। सती-शिव के प्रेम विवाह को सती के पिता दक्ष अपना अपमान समझते हैं। इसी कारण वे यज्ञ में अपनी पुत्री सती को तो बुलाने के लिए तैयार हो जाते हैं किन्तु शिव को नहीं। वे वीरणी से कहते हैं-

शंकर! शंकर!

वह जिसने घर की परम्परा तोड़ी

वह जिसने मेरे यश पर कालिख पोती है

जिसके कारण/मेरा माथा नीचा है सारे समाज में

मेरी ही घर अतिथि रूप में आए।3

कन्या का विवाह पिता की पसन्द अथवा अनुमति से होने की प्राचीन परम्परा को तोड़कर सती ने शंकर से प्रेम विवाह किया। सती के पिता दक्ष इस प्रेम विवाह का शंकर को दोषी मानते हुए अपहरण की संज्ञा देते हैं -

हाँ अपहरण

मैं निश्चय ही इसको अपहरण कहूँगा

क्या अबोध मन को फुसलाकर

देवत्वों का जाल बिछाकर

विविध प्रलोभन देकर

उसे जीत लेना

अपहरण नहीं है?

सती बालिका थी

अबोध थी।4

दुष्यन्त कुमार ने आधुनिक धरातल पर इस सामाजिक समस्या के प्रति नवीन दृष्टिकोण दिया है। दक्ष का समझौतावादी कथन है कि -

यदि शंकर कीसती कामना थी

तो सीधे मुझसे कहता

देवलोक में

इतनी परिचर्चा की क्या आवश्यकता थी?

क्या आवश्यकता थी बोलो

इस रूप के आलम्बन की

व्यर्थ प्रेम के नाम

हमारी लोक हँसाई बदनामी की

परम्पराओं के खंडन की।5

सती-शिव प्रणय सम्बन्ध की अंतिम परिणति सती के आत्मदाह में होती है। शिव सती के मृत शरीर को कंधे पर उठाए युग को भस्म कर देने की हुंकार भरते है। वस्तुतः यह

www.ignited.in

मृत परम्पराओं और जड़ रूढ़ियों के शव को वर्तमान युग में भी सीने से चिपकाए रखने की घटना की ओर संकेत था।

आधुनिक प्रबंधों में मिथकीय संदर्भों की पुनर्सर्जनां बहुतायत में हुई है। मिथक वास्तव मंे आधुनिक कवि की अभिव्यक्ति का ऐसा सशक्त साधन है। जो पौराणिक प्रसंगों, कथाओं, चरित्रों आदि की प्रतीकात्मक प्रस्तुति द्वारा सशक्त आधुनिक व्यंजनाएं देने में सक्षम है। प्रतीकों की नवीन दृष्टि से आधुनिक मनोभावी, संदर्भों, चरित्रों, भावों आदि को अभिव्यक्ति प्रदान की है।6

'एक कंठ विषपायी' नाटक की घटनाएँ और सभी पात्र प्रतीकात्मक है। कवि ने वर्तमान जीवन की वास्तविकता को उभारने के लिए पौराणिक संदर्भ को नया जामा पहनाया है। कवि के शब्दों में 'एक कंठ विषपायी' मेरा पहला काव्य नाटक है। इसकी कथा के सूत्र एक दिन यों ही बातचीत के दौरान श्री अनंतशास्त्री ने मेरे हाथों में थमा दिये थे। उसी दिन मुझे लगा था कि जर्जर रूढ़ियों और परम्परा के शव से चिपटे हुए लोगों के संदर्भ में प्रतीकात्मक रूप से आधुनिक पृष्ठभूमि और नये मूल्यों को संकेतित करने के लिए इस कथा में पर्याप्त सामथ्र्य है।"7

'एक कंठ विषपायी' में भी कवि ने सती-पार्वती के शव को मृत परम्परा का प्रतीक माना है। आधुनिक समय में जबकि मानव-जीवन अनेक समस्याओं में डूबा हुआ है, मृत परम्पराओं के प्रति उसका मोह उसके विवके एवं ज्ञान को नष्ट कर रहा है। शिव के द्वारा सती के मृत शरीर से प्रेम, परम्परा एवं रूढियों से प्रेम है जो सत्य तक पहुंचने में बाधा है। वरूण कुबेर से प्रश्न करता है कि किसी के प्रति अत्याधिक लगाव ज्ञान को मिटा देता है? क्या मोह मैं पड़ा हुआ मनुष्य अंधे के समान हो जाता है कि वह मृत्यु की सच्चाई को भी नहीं देख पाता। इस संसार में और बातें मिथ्या हो सकती है किन्तु मृत्यु की सच्चाई तो सभी जानते हैं। मोह में पड़ा हुआ व्यक्ति परिवर्तन के कारण भी मन में असन्तुष्ट और क्रोधित हो उठता है। परिवर्तन तो सनातन सत्य है। परिवर्तन का नाम ही संसार और जीवन है। शिव शंकर की दशा है कि वे मृत्यु की सच्चाई को भी नहीं मान रहे हैं और सती के मोह के कारण वे मृत शव को सुन्दर और सनातन भी कह रहे हैं तथा उसके साथ चिपके हुए भी है।

क्या मोह/ज्ञान को

इतना अंधा कर देता है

जो कि मृत्यु को भी हम

सत्य नहीं कहते हैं।

परिवर्तन पर होते है

विक्षुब्ध हृदय में

सुन्दर और सनातन कहकर

शव से ही चिपके रहते हैं।8

निजी राग-द्वेष से ग्रस्त होने के कारण शंकर तटस्थ रहकर चिन्तन नहंी कर पाते हैं। क्योंकि राग-द्वेष की अतिवादी प्रवृत्ति मूल्यों को ध्वस्त कर देती हैं लोगों की अन्ध प्रवृत्तियों और स्वार्थ के कारण मूल्यों का विघटन हो रहा है। तभी तो शंकर कहते हैं कि वहीं क्यों आदर्शों के लिए कालकूट पीते रहे। आदर्श आज के मनुष्य के लिए औपचारिकता मात्र है और औपचारिकता मनुष्य के लिए सर्वाधिक घातक हैं।9 आस्थाओं के अभाव में मूल्यहीन जीवन आज की मानवीय नियति है। आज के लोग आस्थाओं के अंधकार में जूझ रहे है जिन्होंने परम्पराओं और रूढ़ियों का पालन किया था। इस आशा से कि उमें अधिक स्थायित्व और जीवन है तथा वे लोग भी आज अनास्था व निराशा में डूबे हैं जिन्होंने संपूर्ण युग का घोर विरोध सहकर गली-सड़ी रूढ़ियों और परम्पराओं का संसोधन किया था। इस आशा से कि व्यतीत से आगे आगत की नवीन आस्थामयी चेतना का सृजन संभव होगा। संवेदना व्यक्त करने आये कुबेर से शिव कहते है कि -

दक्ष के यज्ञ में

आमंत्रित थे सभी देव

था किन्तु उपेक्षित मैं

पर तुमने दिया ध्यान?

देवत्व और आदर्शों का परिधान ओढ़

मैंने क्या पाया?

निर्वासन!

प्रेयसि-वियोग!!

हर परम्परा के मरने का विष मुझे मिला

हर सूत्रपात का

श्रेय ले गये और लोग10

आधुनिक बौद्धिक युग में सम्बन्धों की बागडोर कच्ची हो गयी है। सम्बन्धों की औपचारिकता के कारण शंकर की आत्मा विद्रोह करके अपने अपमान का प्रतिशोध लेने के लिए व्याकुल है। इन्द्र और वरूण व्यक्तिवादी राग शक्तियों और कुबेर व्यक्तिवादी पूंजीपति का प्रतीक है। शंकर इनकी औपचारिकता पूर्ण मित्रता से शोषित होकर इन व्यक्तिवादी शक्तियों द्वारा निर्धारित विधि-निषेध के प्रति विद्रोह कर देते है।

शंकर अपनी पत्नी के मृत शरीर को कंधे पर उठाये फिर रहे हैं। उनके मोह ने ज्ञान और चिरंतन सत्य को झुठला दिया है। इसलिए परम्परा के प्रति अत्यधिक मोह के कारण ही व्यक्ति नवीन मूल्यों को स्वीकार नहीं कर पाता है -

जब-परम्परा का खण्डन कर

कोई नया मूल्य उठता है -

लोग उसे मिथ्या कहते हैं

और जहाँ तक, जब तक संभव हो पाता है

मृत परम्परा के शव से चिपके रहते हैं।11

शंकर सती के शव को उसी तरह अपनाये हुए थे जिस तरह लोग मरी हुई परम्परा को अपनाये हुए रहते है। कुछ दिनों के बाद मरी हुई परम्परा केप्रति आग्रह समाप्त हो जाता है पूरा युग विकृतियों से भर जाता है। वास्तव में अधिकांश लोग शिव है और उसके हृदय से चिपकी हुई जर्जर परम्परायें एवं मृत प्रायः रूढ़ियाँ सती का शव है। परम्परा का खण्डन एवं नवीन मूल्यों की स्थापना ऐसे लोगों को सहन नहीं होती। सती के सड़े गले शव के समान चाहे मृत परम्परा की दुर्गन्ध सारे वातावरण में भर जाये और उससे सबका दम घुटने लगे, पर वे अपने को बदलना नहीं चाहते।

'एक कंठ विषपायी' दक्ष द्वारा शिव के ऐतिहासिक अपमान व उसका बदला लेने के लिए उद्दत शिव की करूण गाथा है जिसमें शिव सती को खो बेठते हैं और उसका शव कंधे पर लटकाए-लटकाए घूमते हैं। सती का शव यहाँ मृत परम्पराओं व रूढ़ियों का प्रतीक है।12 शव की सड़ी हुई दुर्गन्ध की तरह ही युगों से चली आ रही परम्पराएं भी आगे चलकर सड जाती हैं। नये मूल्यों को प्रस्थापित करने के लिए युद्ध अनिवार्य होते है।

विष्णु का चरित्र भी बड़ी बारीकी से गढ़ा गया है। शिव शंकर का मोह भंग करने के लिए अनेक बाण छोड़ने वाले विष्णु स्वीकार करते हैं कि प्राचीन परम्परा के टूटने पर ही नया अंकुर फूटता है जो वास्तव में परिवर्तन का प्रतीक है। विष्णु-शोषण के खिलाफ आवाज उठाकर मूल्यों की स्थापना तथा प्राचीन रूढ़ परम्पराओं का जमकर विरोध करते हैं-

हर परम्परा के मरने पर थोड़े दिन तक

सारा वातावरण शून्य से भर जाता है

जो परम्परा के चरणों में नत मस्तक

उसका हर पोषक

सहसा मन में डर जाता है

अथवा आक्रमण या हिंसक हो उठता हैं।13

शिव शंकर के दुःख का मुख्य कारण स्वयं को नवीन सत्य से न जोड़ पाना ही है। तभी तो इन्द्र कहते हैं कि -

चाहे वे साधारण जन हों

अथवा महादेव शंकर हों।

क्यों इनमें अधिकांश लोग लाशे ढोते हैं।

लाशें मरी मान्यताओं की

मरे विचारों की

भावों की।14

दक्ष परम्पराओं से चिपके रहने वाले तथा शिव उन्हें तोड़कर नवीन मूल्यों की स्थापना करने वाले मानव का प्रतीक है। दक्ष की पत्नी वीरणी कहती है कि लौकिक मर्यादाओं का पालन करने के लिए कई बार इच्छा के विरूद्ध भी कार्य करने पड़ते हैं। सम्बन्ध मधुर स्नेह की धारा से बनते है न कि घृणा, हठ और अनिच्छा से। शंकर ने हठ करके सम्बन्धों की मधुरता को समाप्त किया है परन्तु वीरणी मानती है कि लौकिक सम्बन्धों में इच्छा-अनिच्छा का कोई आधार नहीं होता बल्कि किसी विवश क्षण में हम परस्पर जुड़ जाते हैं। यही विवशताजन्य जुड़ाव सम्बन्ध बन जाता है। वह मानती है कि शंकर ने सती का अपहरण किया है इस अपहरण के कारण घोर अपमान महसूस करता है। वह अपनी लोक प्रतिष्ठा की हत्या का बदला लेने के लिए शिव और सती की उपेक्षा करता है।

www.ignited.in

शंकर अपमान और उपेक्षा से पीड़ित अपनी पत्नी के प्रति-अदम्य मोह के कारण अपमान का बदला लेने के लिए संकल्पबद्ध हो उठते हैं। शंकर के दुःख की घनीभूत पीड़ा स्वाभाविक है। सती के शव की दुर्गंध आधुनिक युग में परम्पराओं के मरने पर विषाक्त एवं अर्थहीन हो जाने पर, समाज को उनसे दुर्गंध अर्थात् अनिष्ट का कार्य ही करती है। तभी तो वरूण कुबेर से कहते है कि -

पर अलका पति

ऐसा भी क्या मोह

कि शिव को चिपटाये फिरते है तन से।

क्या तुमको

दुर्गन्ध नहीं आई उस क्षण से?

मैं तो खड़ा नहीं रह पाया

पास निमिष भर।15

एक कंठ विषपायी में दुष्यन्त कुमार ने जर्जर रूढ़ियों और परम्पराओं के शव से चिपटे हुए लोगों के संदर्भ में प्रतीकात्मक रूप से आधुनिक पृष्ठभूमि में चित्रण किया है। आधुनिक युग हमारी परम्परागत मर्यादाओं व मान्यताओं के विघटन का साक्षी है। यहाँ रोज मान्यताएँ व मर्यादाएँ परिवर्तित होती हैं, टूटती है और फिर बनती है। मान्यताएं व मर्यादाएं जहां तक हमारी सहायक रही है वहाँ तक उनका पालन करना तर्क संगत है। परम्पराओं का रूढ़िरहित होकर ही पालन करना चाहिए। मर्यादाओं व मान्यताओं का विघटन आज के समय में सकारात्मक और नकारात्मक दोनों ही दिशाओं में हुआ है। मानवीय चेतना की सार्थकता इसी में है कि वह विघटन का सकारात्मक रूप साकार कर सके और मर्यादाओं के विघटन को अपने विघटन की नियति न बनने दें।

दुष्यन्त कुमार ने पौराणिक संदर्भ को नवीन परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत कर नवीन चेतना को व्यक्त किया है। इस कथा में दक्ष एक अहंकारी शासक के प्रतीक हैं। धन संचय के प्रतीक कुबेर है, सर्वहत, शिव परम्परा से पीड़ित और समस्याग्रस्त जनता का प्रतिनिधित्व करते हैं। जब शासक का कार्य व्यवहार प्रजा विमुख हो जाता है तब प्रजा की संवेदना उसे पद से हटाने की ताकत रखती है। विष्णु द्वारा छोड़ा गया प्रणमी बाण शक्ति का प्रतीक है। जो समाधान के हेतु छोड़ा जाता है। वीरिणी और सती आधुनिक नारी की प्रतीक है। जिन्होंने पुरूष प्रधान समाज व्यवस्था के प्रति असंतोष प्रकट किया है। कवि ने राष्ट्रनियामकों की हृदयहीनता तथा विरोधियों की भूमिका का भी यथार्थ चित्रण किया है। इन्द्र, वरूण, कुबेर, जो विरोधी नेताओं के प्रतीक है, देश को युद्ध की आग में झोंककर अपनी रोटी सेंकना चाहते हैं। ब्रहमा, विष्णु जनकल्याणकारी है, हर चरित्र प्रतीकात्मक है।

संदर्भ -

1. डॉ. हरिचरण शर्मा, नयी कविता का मूल्यांकन, पृ0 104
2. दुष्यन्त कुमार, एक कंठ विषपायी, पृ0 112
3. वहीं, पृ0 11
4. दुष्यन्त कुमार, एक कंठ विषवायी, लोकभारती प्रकाशन, सं. 2002, पृ0 13
5. वहीं, पृ0 17-18
6. उर्वशी शर्मा, नव्य प्रबन्ध काव्यों में आधुनिक बोध, पृ0 278
7. दुष्यन्त कुमार, एक कंठ विषवायी, आभार कथा
8. दुष्यन्त कुमार, एक कंठ विषपायी, पृ0 51
9. रश्मि कुमार, नयी कविता के मिथक काव्य, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्र.सं. 2000, पृ0 85
10. दुष्यन्त कुमार, एक कंठ विषपायी, पृ0 83-84
11. वहीं, पृ0 91
12. उर्वशी शर्मा, नव्य प्रबन्ध काव्यों में आधुनिक बोध, बोहरा प्रकाशन, जयपुर, पृ0 285
13. दुष्यन्त कुमार, एक कंठ विषपायी, पृ0 130
14. वहीं, पृ0 131
15. वहीं, पृ0 90

Corresponding Author

Sweety Dhull*

Gurugram, Haryana